

(iii) सम्प्रदान लृपुरुष समास - 'के लिए'

इस समास दोनों पदों के बीच प्रयुक्त विभक्ति चिह्न 'के लिए' का लोप हो जाता है, इसलिए इसे 'सम्प्रदान लृपुरुष समास' कहते हैं-

जैसे - रंगमंच - रंग के लिए मंच

घुड़शास - घोड़े के लिए शास

रणभूमि - रण के लिए भूमि,

रसोईघर - रसोई के लिए घर,

चिड़ियाघर - चिड़ियाओं के लिए घर,

पाकशाला - पकाने के लिए शाला,

व्यायामशाला - व्यायाम के लिए शाला

विद्यालय - विद्या के लिए आलय

वाचनालय - वाचन के लिए आलय

कारावास- कारा के लिए आवास

छात्रावास- छात्रों के लिए आवास

पाक सामग्री- पाक/पकाने के लिए सामग्री

हवन सामग्री- हवन के लिए सामग्री

विधान परिषद्- विधान के लिए परिषद्

यज्ञशाला- यज्ञ के लिए शाला

गृहस्थाश्रम- गृहस्थ के लिए आश्रम

काकबलि - काक के लिए बलि,

भूतबलि - भूत के लिए बलि
 बलिपशु - बलि के लिए पशु

कृषिशाला - कृषि के लिए शाला
 विशेष - जिन शब्दों के अन्त में घर, शाला, आलय, आवास और सामग्री लिखा रहता है, उनमें 'सम्प्रदान तत्पुरुष' समास होता है।

(iv) अपादान तत्पुरुष समास - 'से' (अलग होने के अर्थ में)

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त विभक्ति चिह्न 'से' का लोप हो जाता है, जो अलग होने के अर्थ का बोध कराता है, इसलिए इसे अपादान-तत्पुरुष समास कहते हैं-

जैसे - अकालमुक्त - अकाल से मुक्त,
 पापमुक्त - पाप से मुक्त

भयभीत- भय से भीत (जरा डुआ)

आदिवासी- आदि (प्रारम्भ) से वासी, ^{नरकभय- नरक से भय}

आशाहीन- आशा से अतीत (परे) ^{इन्द्रियातीत- इन्द्रियों से अतीत}

भयमुक्त- भय से मुक्त ^{हृदयहीन- हृदय से हीन}

(V) सम्बन्ध नपुंसक समास- 'का/की/के'

इस समास में दोनों पदों के बीच प्रयुक्त कारक चिह्न 'का/की/के' का लोप हो जाता है, इसलिए इसे 'सम्बन्ध नपुंसक' समास कहते हैं-

जैसे- रामचरित- राम का चरित्र,
 तुलसीमाता- तुलसी की माता,

चायबागान- चाय के बागान,

मंत्रिपरिषद्- मंत्रियों की परिषद्

जरबालि- जर की बालि,

पशुबालि- पशु की बालि

कन्यादान- कन्या का दान,

ग्रामवासी- ग्राम का वासी

नगरसेठ- नगर का सेठ

(VI) अधिकरण तत्पुरुष समास - 'में/पर'

इस समास में दोनों पदों

के बीच प्रयुक्त कारक चिह्न 'में/पर' का लोप हो

जाता है, इसलिए इसे अधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं-

जैसे - नीरवारिन् - नीरवो में अरु (भ्रमण)

कवि पुंगव - कवियों में पुंगव (श्रेष्ठ)

मुनिश्रेष्ठ - मुनियों में श्रेष्ठ,

जीवदया - जीवों पर दया

पराश्रित - पर (दूसरे) पर आश्रित,

वनवास - वन में वास